मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के राजनीतिक नेतृत्व में बिहार (2005—2020 के विशेष संदर्भ में)

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय कामेश्वरनगर, दरभंगा

के

सामाजिक विज्ञान संकाय

(राजनीति विज्ञान)

में

पी—एच0 डी0 उपाधि हेतु

प्रस्तावित शोध—प्रारूप की रूपरेखा

शोध पर्यवेक्षक

डॉ0 राजीव रौशन
सहायक प्राध्यापक
राजनीति विज्ञान विभाग
आर. एन. ए. आर. कॉलेज,
समस्तीपुर

शोधार्थी

हीना परवीन
राजनीति विज्ञान
PAT क्रमांक—22160068
वर्ग क्रमांक—21
PAT : 2021—2022

शोध कार्य का शीर्षक (Title of Research) :-

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के राजनीतिक नेतृत्व में बिहार (2005 – 2020 के विशेष संदर्भ में)

शोध समस्या का प्राक्कथन (Statement of the Research problem):-

राजनीतिक नेतृत्व में व्यक्ति को एक नायक की भूमिका अदा करनी पड़ती है। सामान्यतः एक व्यक्ति को राजनीतिक नेतृत्व करते समय जनता के मध्य अपने सद्गुण चरित्रों के साथ-साथ उनके सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक विकास के साथ ही सर्वांगीण विकास के प्रतिमान को प्रस्तुत करना होता है। अतः राजनीतिक नेतृत्व में सबसे महत्वपूर्ण तत्व किसी व्यक्ति का राजनीति में आने का उद्देश्य तथा वह कौन सा लक्ष्य जिसकी प्राप्ति हेतु कोई व्यक्ति राजनीति में आने के लिए प्रेरित होता है।

बिहार सदैव ही देश की राजनीति का केंद्र-बिंदु रहा है। जहाँ महत्वपूर्ण नेतृत्व की भूमिका देखने को मिलती रही। डॉ. श्री कृष्ण सिंह, श्री दीप नारायण सिंह से लेकर डॉ.जगन्नाथ मिश्र, श्री कर्पूरी ठाकुर, श्री लालू प्रसाद यादव, श्रीमती राबड़ी देवी, श्री जीतन राम माँझी तथा श्री नीतीश कुमार आदि ने मुख्यमंत्री के रूप में नेतृत्व किया। डॉ. श्री कृष्ण सिंह के समय में बिहार के विकास में विभिन्न क्षेत्रों में योजनाओं की शुरुआत की गई थी जैसे कि कृषि और उद्योग के क्षेत्र में प्रोत्साहन। इनके बाद बने मुख्यमंत्रियों ने भी अपने-अपने कार्यकाल में विकास के कार्यों को आगे बढ़ाया। सामाजिक न्याय की अवधारणा या आदर्श को आगे बढ़ाने में कर्पूरी ठाकुर जी का बहुमूल्य योगदान है। इनके बाद भी मुख्यमंत्रियों ने बिहार के विकास के लिए कार्य किया।

यद्यपि अभी भी बिहार के विकास के मार्ग में बहुत सारी चुनौतियां हैं चाहे वह सरकार की स्थायित्व का प्रश्न हो, दलितों पर बढ़ते अत्याचार और जातिवाद की चुनौती हो, राजनीतिक अपराधीकरण का हो, मजदूरों के पलायन रोकने का हो, बेरोजगारी को कम करने का हो, शराबबंदी का हो, महिला उत्पीड़न एवं सशक्तिकरण का हो, औद्योगीकरण को बढ़ावा देने का हो, या बिहार में शैक्षणिक विकास में उच्चतम शिक्षा के अनुपात को बढ़ाने का हो। इन चुनौतियों के अलावा और भी कई आंतरिक या बाह्य चुनौतियों का प्रश्न है, जिसका समाधान ढूंढना वास्तव में सरकार के लिए गंभीर प्रश्न और चुनौतियां हैं।

नीतीश कुमार के शासन काल में शिक्षा की गुणवत्ता कल-कारखाने की कमी, पलायन, बेरोजगारी आदि पर सवाल उठते रहे हैं। इस आधार को भी ध्यान में रखते हुए कुछ प्रश्न उभर कर सामने आ रहे है।

- नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार के विकास मॉडल को किन-किन चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है?
- बेरोजगारी और पलायन को कम करने में नीतीश कुमार का नेतृत्व कहाँ तक सफल हो पाया है?

Hema parveen
18.04.24

R. Roushan
18.04.24

- महिलाओं को सशक्त और सक्षम बनाने में नीतीश कुमार की योजनाएं कहाँ तक सफल रही?
- क्या नीतीश कुमार भ्रष्टाचार पर रोकथाम कर पा रहे हैं?
- शराबबंदी से समाज और अर्थव्यवस्था के सामने क्या-क्या चुनौतियां आई?
- क्या नीतीश कुमार के नेतृत्व में औद्योगिक पिछड़ापन दूर हो पा रहा है?
- क्या नीतीश कुमार के नेतृत्व में राजनीतिक सहभागिता बढ़ी है?

शोध का आच्छादन: सारतत्व एवं क्षेत्र (Research Coverage: theme and area):-

सर्वप्रथम श्री नीतीश कुमार 2000 ई. में बिहार के मुख्यमंत्री मात्र 07 दिनों के लिए ही बने। 2005 ईस्वी में जब श्री नीतीश कुमार दोबारा मुख्यमंत्री बने तब बिहार अपने काम की वजह से देश में लगातार सुर्खियों में था इतना ही नहीं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी बिहार आकर्षण का केंद्र बना हुआ था दुनिया की प्रसिद्ध आर्थिक पत्रिका व इकोनॉमिस्ट समाचार पत्रिका **"न्यूज़वीक"**, समाचार पत्र **"द न्यूयॉर्क टाइम्स"** ने बिहार सरकार और उसके मुखिया के कार्यों की प्रशंसा की गई थी। अंग्रेजी के प्रसिद्ध समाचार पत्रिका **"टाइम"** ने अपने 07नवंबर 2011 के अंक में बिहार में हो रहे बदलाव पर **"ब्रेकिंग थ्रू हाउ नीतीश कुमार टर्न्ड बिहार इन टू द मॉडल ऑफ़ इंडियन रिफॉर्म"** शीर्षक से बिहार के तात्कालिक नीतीश सरकार की उपलब्धियों की चर्चा की गई थी।

श्री नीतीश कुमार के शासन काल **2005 – 2020 ई.** में जो बदलाव साफ तौर पर देखा गया है। वह है, नकारात्मक विकास की अनुपस्थिति। अर्थव्यवस्था के बेहतर प्रबंधन के प्रयास के फलस्वरूप बिहार विकास कि वृद्धि के पुराने पैटर्न से बाहर आ चुका है। उन्होंने राज्य में पूंजी निवेश को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न पहल की, जिससे ऐसे उद्योगों की स्थापना हो सके, जिसमें गरीब और पिछड़े लोगों को रोज़गार मिले साथ ही पलायन को रोका जा सके। इसके लिए विशेष कार्यक्रमों की शुरुआत की गई ,जो उनके **2015** और **2020** के शासन काल में परिलक्षित होती है। जिसके तहत **2015 में सात निश्चय योजना पार्ट-1** लेकर आए। जिसमें **प्रथम** आर्थिक हल, युवाओं का बल **द्वितीय** आरक्षित रोजगार, महिलाओं को अधिकार **तृतीय** हर घर, बिजली लगातार **चतुर्थ** हर घर नल का जल **पंचम** घर तक पक्की गली-नाली **षष्ठम** शौचालय निर्माण, घर का सम्मान और **सप्तम्** अवसर बढ़ें, आगे पढ़ें शामिल है।

इस योजना की सफलता को देखते हुए पुनः **2020 में सात निश्चय योजना पार्ट -2** लेकर आए। जिसमें **पहला** युवा शक्ति, बिहार की प्रगति **दूसरा** सशक्त महिला, सक्षम महिला **तीसरा** हर घर खेत को सिंचाई के लिए पानी **चौथा** स्वच्छ गांव, समृद्ध गांव **पाँचवाँ** स्वच्छ शहर विकसित शहर **छठा** सुलभ संपर्कता और **सातवाँ** सबके लिए स्वास्थ्य सुविधा। इसके माध्यम से नीतीश कुमार द्वारा समावेशी विकास करने का प्रयास किया जा रहा है।

प्रस्तावित शोध प्रबंध में श्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार का एक विश्लेषणात्मक एवं मूल्यांकन अध्ययन प्रस्तुत करने के लिये मुख्यतः निम्न क्षेत्रों- राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था को चुना गया है।

साहित्य का पुनरावलोकन (Review of literature):-

Henu Parveen 18.04.24

R. Roushan 18.04.24

- **रविंद्र कुमार वर्मा ने अपनी पुस्तक, "राजनैतिक नेतृत्व" (2012),**में नेतृत्व के उद्भव का वर्णन के साथ-साथ राजनैतिक नेतृत्व की अवधारणात्मक एवं व्यावहारिक पक्षों पर प्रकाश डाला है। साथ ही नेतृत्त्व के विभिन्न प्रकारों की जानकारी दी है, नेतृत्वकर्ता के विशेष गुण जैसे क्षमता, आत्मविश्वास, निर्णय लेने की योग्यता आदि गुणों के महत्त्वता को बताए है।
- **अरुण सिन्हा ने अपनी पुस्तक, "नीतीश कुमार और उभरता बिहार" (2013),** में नीतीश कुमार की कर्मठ एवं जुझारू कार्यशैली का वर्णन किया है। जिसने बिहार को एक नई दिशा और एक नई पहचान दी। उन्होंने बिहार के सामाजिक और राजनीतिक परिवेश में नीतीश कुमार के उदय की जानकारी दी है 1960 के दशक के आखिर से शुरू हुए सत्ता परिवर्तन का विस्तार से वर्णन किया है।

- **डॉ. कामेश्वर झा ने अपनी पुस्तक "नित नूतन बिहार: उन्नायक नीतीश कुमार"(2019),** में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को एक कर्मयोगी बताया । पुस्तक की प्रस्तावना में कहा है कि नीतीश कुमार का जीवन दर्शन पारदर्शिता, ईमानदारी, सर्वधर्म समभाव, सामाजिक समरसता, सुशासन, निर्भीकता और अंतिम पायदान पर बैठे व्यक्ति तक विकास का लाभ पहुंचाना है। यह पुस्तक 10 अध्यायों में है, हर अध्याय नीतीश कुमार की एक विशिष्ट पहचान स्थापित करती है।

- **डॉ.जगन्नाथ मिश्र ने अपनी पुस्तक "बिहार: विकास और संघर्ष" (2012),** में स्वयं के दीर्घकालिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक अनुभवों पर आधारित कई सुचिंतित निबंध संकलित किए हैं। साथ ही 1989 तक की अहम राष्ट्रीय विशेष रूप से आर्थिक नीतियों से संबंधित मुद्दों का विश्लेषण किया है। श्री लालू प्रसाद और श्रीमती राबड़ी देवी के शासन काल की जानकारी दी है।

- **डॉ.ए. एम. झा एवं डॉ. मिन्नी ठाकुर की संपादकीय पुस्तक, "बिहार सुशासन की ओर"(2012),** में विभिन्न शोध छात्रों, प्राध्यापकों एवं शिक्षाविदो, बुद्धिजीवियों के प्रपत्र का संकलन है जो बिहार के सुशासन के समग्र बिंदुओं को ध्यान में रखकर संकलित किया गया है। डॉ. मिन्नी ठाकुर ने कहा कि बिहार सुशासन की राह पर बढ़ चला है उपलब्धियां है तो चुनौतियां भी है। परन्तु बिहार अपने काम की वजह से देश में लगातार सुर्खियों में है।

- **पंकज कुमार झा ने अपनी पुस्तक "सुशासन के आईने में नया बिहार" (2010),**में हमारी भेंट बिहार में लोकतांत्रिक राजनीति के उस चेहरे से करवाती है जो भारत में ही नहीं पूरी दुनिया में लोकतांत्रिक राजनीति का सबसे पेचीदा सवाल है बिहार में सुशासन तभी कारगर व प्रभावी होगा जब भूमि सुधार समान शिक्षा विधेयक किसान आयोग की सिफारिश को लागू किया जाएगा । एक सुखद पहलू है कि आज बिहार में तथा बिहार से बाहर रहने वाले प्रत्येक बिहारी के मन में साहस और गर्व की अनुभूति है ज्यादातर लोगों का मानना है कि नीतीश कुमार के शासन काल में सड़के बनी है कानून व्यवस्था की स्थिति सुधरी है पुस्तक में शामिल आम लोगों की चिट्ठियां बिहार में सुशासन का

Humeparveen
18.04.24

R. Raushan
18.04.24

प्रमाण है समाज के अलग-अलग तबके को खास तौर से बहिष्कृत समाज की आवाज को शामिल करना इस पुस्तक की विशिष्ट उपलब्धि है।

- **डॉ.विश्वनाथ प्रसाद वर्मा ने अपनी पुस्तक, "निर्वाचन और राजनीति:बिहार के तीन राजनीतिक निर्वाचनों का अध्ययन"(2014),** में बिहार के तीन चुनाव 1967, 1969 और 1971 का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है, जो 4 खण्डों में है जिसमें पहला खण्ड बिहार में 1967 का महानिर्वाचन में निर्वाचन अभियान की प्रविधियों और दलों के राजनीतिक विचार के पक्षों को बताया है। दूसरे खण्ड 1969 के महानिर्वाचन इसमें मध्यावधि चुनाव के पूर्व बिहार कि राजनीतिक व्यवस्था, मनोनयन की प्रक्रिया, तीसरे खण्ड में निर्वाचन प्रचार के वैचारिक आधार और निर्वाचन परिणामों का विश्लेषण है। अंतिम खण्ड 4 में निर्वाचन प्रचार के आदर्शवादी आधार की जानकारी दी गई।

- **के. के. मिश्र ने अपनी पुस्तक "विकास का समाजशास्त्र" (2015),** में विकास के विभिन्न सिद्धांतों जैसे सामाजिक विकास, राजनीतिक विकास, आर्थिक विकास और सतत विकास आदि का वर्णन किया है साथ ही राजनीतिक विचारों जैसे शिक्षा, उद्यमिता और औद्योगीकरण आदि की विवेचना की है।

- **प्रसन्न कुमार चौधरी और श्रीकांत ने अपनी पुस्तक, "बिहार में सामाजिक परिवर्तन के कुछ आयाम"(2010),** में कहा है, कि समाज में जितनी विषमताएं होती है उतने ही प्रकार के उत्पीड़न होते हैं। उन्हें दूर करने के लिए उतने ही प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष आंदोलन और प्रयास भी चलते रहते है।

- **वीरेंद्र पाण्डे ने अपनी पुस्तक, "भारत में शिक्षा एवं शैक्षणिक प्रणाली का विकास''(2015),**में वैदिक कालीन शिक्षा से लेकर भारत के आधुनिक शिक्षा व्यवस्था कि व्याख्या की है। साथ ही उन्होंने कहा कि शिक्षा का व्यापक प्रसार महिलाओं के बीच न होना भी महिलाओं के पिछड़ने का मुख्य कारणों में से एक है। इन्हीं कमियों को दूर करने के उपायों का विस्तार से वर्णन किया है।

शोध आलेख:-

- **आशुतोष कुमार ने अपने लेख, "राज्य स्तर पर विकास फोकस और चुनावी सफलता: बिहार के नेता के रूप में नीतीश कुमार" (2013),** में कहा कि समकालीन भारत में राजनीतिक और आर्थिक विकास के प्रभावी क्षेत्र के रूप में क्षेत्रीय राज्यों के उद्भव ने राज्य-स्तरीय नेताओं को बढ़ती शक्ति प्रदान की है। वर्तमान गठबंधन युग में, जो इस तरह के क्षेत्रीय करण को दर्शाता है, इससे प्रभावी राज्य-आधारित पार्टियों और उनके नेताओं को प्रमुखता मिलती है। बिहार की हालिया राजनीति पर ध्यान केंद्रित करते हुए, यह लेख दिखाता है कि 2005 से बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, अपने पूर्ववर्ती लालू यादव के विपरीत, किस तरह से 'असामान्य' लगते हैं। राज्य के नए नेताओं के बीच प्रचलित नव-वंशवादी राजनीतिक प्रवृत्तियों को दरकिनार करते हुए, नीतीश कुमार ने एक पूर्ववर्ती 'विफल राज्य' में

Heena parveen
18.04.24

R. Roushan
18.04.24

गुणवत्तापूर्ण शासन प्रदान करने के लिए निजी और सार्वजनिक संसाधनों दोनों को शामिल करने पर ध्यान केंद्रित किया है। पारंपरिक समुदाय या वोट बैंक में निहित होने से कहीं अधिक, यह काफी हद तक निरंतर चुनावी सफलता की व्याख्या कर सकता है, हालांकि एक नेता प्रभावी कार्यान्वयन के लिए सभी जोखिमों के साथ अपने आसपास के लोगों पर भी निर्भर करता है।

- **अवनीश कुमार ने अपने लेख "नीतीश कुमार की सम्मानजनक विदाई: जाति की राजनीति का संक्षिप्त इतिहास"(2013),** में नीतीश कुमार का राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन से बाहर निकलना सम्मानजनक हो सकता है, लेकिन अगर वह बिहार में जड़ें जमा चुकी सामंती और सांप्रदायिक ताकतों से लड़ना चाहते हैं तो उन्हें अपने नव-उदारवादी "विकासवादी" झुकाव को छोड़ना होगा। यह लेख बिहार की राजनीति का एक संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत करता है जिसके कारण नीतीश कुमार और भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाले एनडीए के बीच अलगाव हुआ।

- **डॉ. मुकुल बिहारी वर्मा एवं एस. कुमार बिहार की राजनीति में महिला आंदोलन, 1990-2020.(2023),** में 1990 से लेकर 2020 तक के लम्बे कालखंड के भीतर बिहार की राजनीति को महिला-आन्दोलनों की नज़र से देखने की कोशिश करते है. चाहे विभिन्न राजनीतिक दलों के महिला संघों द्वारा किया गया आंदोलन हो या फिर स्वतःस्फूर्त आन्दोलन हो , बिहार की राजनीति में महिलाओं की दावेदारी मज़बूत करने के लिए सभी का योगदान महत्वपूर्ण रहा है. बिहार के पंचायतों में महिलाओं के लिए 50 फीसदी आरक्षण को लागू करने में बिहार देश भर में पहले स्थान पर रहा है और इसमें कोई दो राय नहीं है कि जमीनी स्तर पर महिलाओं के जबरदस्त आन्दोलन के कारण ही सरकार को इसे लागू करना पड़ा है. बिहार में महिलाओं के लिए न्यूनतम और सामान मजदूरी का सवाल हो, या फिर शराबबंदी का आन्दोलन हो सभी में महिलाओं ने बढ-चढकर हिस्सा लिया है और शासन को इसे लागू करने के लिए मजबूर किया है. यह आलेख इन सभी पहलुओं की विस्तृत पड़ताल करता है।

- **अशोक पंकज ने अपने लेख "जीविका , महिला और ग्रामीण बिहार: विकास हस्तक्षेप का सांस्कृतिक प्रभाव"(2020),** में ,ग्रामीण बिहार (भारत) मे आजीविका हस्तक्षेप के कारण हुए सांस्कृतिक परिवर्तन की कहानी बताता है। यह दर्शाता है कि जीविका , एक माइक्रोक्रेडिट-आधारित ग्रामीण आजीविका संवर्धन परियोजना का प्रभाव , आजीविका को बढ़ावा देने के आह्वान से कहीं आगे तक जाता है। लेख सामाजिक परिवर्तन के संरचनात्मक और सांस्कृतिक पहलुओं के बीच अंतर को पहचानता है और मानता है कि बिहार की ग्रामीण महिलाओं पर जीविका का एक महत्वपूर्ण प्रभाव उनकी गर्दन पर पितृसत्तात्मक फंदे को सांस्कृतिक रूप से ढीला करना रहा है। इसका तर्क है कि इस तरह के प्रभाव की स्थिरता, हालांकि, असंभावित है, क्योंकि पितृसत्ता के संरचनात्मक आधार, अर्थात्, परिवार, जाति, भूमि और कृषि, काफी हद तक अप्रभावित रहते हैं। इसके अलावा, पूरी प्रक्रिया बहिर्जात है – कार्यक्रम हस्तक्षेप का निर्माण।

- **राजबीर सिंह दलाल एवं नीना चुग ने अपने लेख "भारत में सुशासन की दिशा में चुनावी सुधार के प्रयास: एक मूल्यांकन"(2016),** में निष्पक्ष और स्वतंत्र चुनाव प्रतिनिधि लोकतंत्र की रीढ़ हैं जो न केवल इसकी सफलता दर

Neena Parveen 18.04.24

R. Roushan 18.04.24

निर्धारित करते हैं बल्कि इसके विकास के स्तर को मापने के लिए पैरामीटर भी निर्धारित करते हैं। इसलिए, चुनावी प्रक्रिया की गुणवत्ता वहां प्रचलित शासन की गुणवत्ता के लिए एक पूर्व शर्त है। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है (85 करोड़ से अधिक मतदाता) जहां अधिकतम युवा आबादी है। यह किसी भी अन्य विकासशील देश की सरकार से अधिक स्थिर और सफल है। भारत ने अपनी एकता और स्थिरता के साथ-साथ राष्ट्र निर्माण और सामाजिक-आर्थिक पुनर्निर्माण को सुरक्षित करने के लिए संसदीय लोकतंत्र को अपनाया। आजादी के छह दशक से अधिक समय के बाद भी, देश जातिवाद, सांप्रदायिकता, राजनीति का अपराधीकरण, भ्रष्टाचार, गरीबी, बेरोजगारी, सरकारी संस्थानों में गिरावट, राजनीति में नैतिक मूल्यों की गिरावट और हमारे देश में व्याप्त कुरीतियों जैसे कारकों से खतरे का सामना कर रहा है। इलेक्ट्रोल प्रणाली. जनता की अपेक्षाओं और आकांक्षाओं को उनके ही चुने हुए प्रतिनिधि तोड़ देते हैं। भारतीय संविधान ने भारत के राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति तथा संसद के निष्पक्ष और स्वतंत्र चुनाव आयोजित करने के लिए देश को एक उच्चाधिकार प्राप्त एकीकृत प्राधिकरण, चुनाव आयोग (ईसी) प्रदान किया है, जो चरित्र में स्वायत्त और कार्यकारी और राजनीतिक हस्तक्षेप से मुक्त है। और राज्य विधानमंडल। लेकिन, समय के साथ कई विकृतियाँ और बुरी प्रथाएँ जैसे चुनावों में धन और बाहुबल का उपयोग, बूथ कैप्चरिंग; आधिकारिक मशीनरी का दुरुपयोग; चुनावी हिंसा; गैर-गंभीर और स्वतंत्र उम्मीदवारों की भागीदारी; और क्षेत्रवाद आदि हमारी चुनावी प्रक्रिया में घर कर गए हैं जिससे न केवल शासन का संकट पैदा हुआ है बल्कि लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए भी खतरा पैदा हो गया है।

- **इंद्रनील दासगुप्ता ने अपने लेख "1990 के दशक से भारत में श्रम बाज़ार"(2018),**में,भारतीय अर्थव्यवस्था ने 1991 में व्यापार उदारीकरण, घरेलू विनियमन और सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों के निजीकरण की चल रही प्रक्रिया में प्रवेश किया। तब से, प्रति व्यक्ति उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जबकि कुल बेरोजगारी दर कम बनी हुई है। हालाँकि, श्रम बल भागीदारी दर में तेजी से गिरावट आई है, खासकर महिलाओं के लिए। इसके अलावा, युवा बेरोजगारी लगातार ऊंची बनी हुई है, श्रम बल का एक बड़ा हिस्सा अनौपचारिक क्षेत्र में काम करना जारी रखता है, और अकुशल ग्रामीण या फैक्ट्री श्रमिकों के लिए मजदूरी में निरंतर वृद्धि के बहुत कम सबूत हैं।

- **अलख एन शर्मा ने अपने लेख "बिहार में गरीबी की राजनीतिक अर्थव्यवस्था"(1995),** में बिहार की गंभीर गरीबी की स्थिति का पता कृषि और औद्योगिक दोनों क्षेत्रों के आर्थिक पिछड़ेपन से लगाया जा सकता है। जबकि प्राकृतिक या तकनीकी कारक जैसे बाढ़, बुनियादी ढांचे का खराब विकास और उच्च जनसंख्या घनत्व अपनी भूमिका निभाते हैं, राज्य का पिछड़ापन असमान और शोषणकारी सामाजिक-आर्थिक संरचना, राजनीतिक नेतृत्व की कमी और प्रशासनिक और कानून के लगभग पूर्ण पतन से संबंधित है। और मशीनरी को ऑर्डर करें – यहां तक कि कहा जाता है कि बिहार में 'राज्य सूख गया है'। इन स्थितियों ने गैर-विकास का माहौल तैयार कर दिया है जिसमें बड़े पैमाने पर गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों का भी बहुत कम प्रभाव पड़ा है। आशा की एकमात्र किरण ग्रामीण गरीबों की बढ़ती जागरूकता और लामबंदी है, ज़िसकी क्षमता का उपयोग ऐसी योजनाओं के प्रबंधन में सुधार करने और राज्य पर संरचनात्मक परिवर्तन करने के लिए दबाव डालने के लिए किया जा सकता है।

R. Roushan 18.04.24

Humaparveen 18.04.24

शोध का उद्देश्य (Objective of the Research): -

- नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार में आए परिवर्तनों का एक अनुभवमूलक अध्ययन प्रस्तुत किया जाना।
- इसके माध्यम से बिहार के राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विकास को नई दिशा देना।
- बिहार में बढ़ रही बेरोजगारी तथा पलायन को रोकने के लिए बौद्धिक प्रयास करना।
- महिलाओं को सशक्तिकरण की ओर बढ़ाने का प्रयास।
- बिहार के नौजवानों के लिए आधुनिक कौशल विकास योजनाओं को बढ़ावा देना।
- बिहार के विकास में औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देने का उपाय खोजना।
- बिहार में शैक्षणिक विकास विशेषकर छात्र छात्राओं को उच्चतर शिक्षा के अनुपात को बढ़ाने का प्रयास।

शोध परिकल्पनाएं (Research Hypothesis) :-

- बिहार के स्थिर विकास के लिए नीतीश कुमार का प्रभावी नेतृत्व एक महत्वपूर्ण कारक है।
- नीतीश कुमार के मुख्यमंत्रित्व काल में बिहार में रोज़गार के अवसर बढ़े है, पलायन दर कम हुआ है।
- महिला सशक्तिकरण नीतीश कुमार के काल की महत्त्वपूर्ण सफलता है।
- राजनीतिक सहभागिता एवं समावेशी राजनीति को बढ़ावा देने में नीतीश कुमार के प्रयास सफल हुए है।
- नीतीश कुमार की आर्थिक नीतियां बिहार में आधारभूत संरचना को बढ़ावा देने में सार्थक हुई है।

प्रस्तुत शोध कार्य का अनुशासन एवं अन्य अनुशासन के लिए योगदान (Contribution of the research work to the discipline and other discipline) :-

बिहार के विकास में पूर्व मुख्यमंत्रियों द्वारा किए गए कार्यों और नीतीश कुमार के द्वारा किए गए कार्यों का एक तुलनात्मक अध्ययन करके पता लगाना, कि किस तरह कि नीतियों, नियमों, प्रयासों के माध्यम से बिहार के विकास को बढ़ावा दिया जा सकता है। इस शोध के माध्यम से राजनीतिक विज्ञान अनुशासन को लाभ प्राप्त होगा। साथ ही अन्य अनुशासन जैसे- समाजशास्त्र, इतिहास, अर्थशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, और मनोविज्ञान आदि अनुशासन को इस शोध कार्य का लाभ प्राप्त हो सकेगा।

शोध प्रविधि (Methodological Approach) :-

प्रस्तुत शोध कार्य को पूरा करने के लिए ऐतिहासिक, तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन पद्धति का प्रयोग किया जाएगा साथ ही गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए अनुभव मूलक पद्धति का भी प्रयोग किया जाएगा। इस शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीय स्रोतों के माध्यम से सूचनाएँ एवं आंकड़े संग्रहित किया जाएगा।

R. Roushan
18.04.24

Hena Parveen
18.04.24

प्राथमिक स्रोत (Primary Source) -

मौलिक स्रोत पूर्णरूपेण सरकारी दस्तावेजों पर आधारित होगा। नीतीश कुमार द्वारा लिखित लेखों, पुस्तकों, भाषणों एवं उनके साक्षात्कार के साथ ही बिहार सरकार द्वारा समय-समय पर जारी आधिकारिक रिपोर्टों और सरकारी साइटों का उपयोग किया जाएगा।

द्वितीयक स्रोत (Secondary Source) -

सहायक स्रोत में मूलतः नीतीश कुमार एवं विकास के बिहार मॉडल से संबंधित अन्य लेखकों की पुस्तकों, शोध पत्रिकाओं, लेखों, समाचार-पत्रों, पत्र-पत्रिकाओं एवं भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद नई दिल्ली, बिहार विधानसभा पुस्तकालय पटना आदि से उपलब्ध विवरणों का उपयोग किया जाएगा।

कार्य प्रारूप : संभावित कार्य योजना (Work design: Tentative plan of the work):-

अध्याय 1:- भूमिका

अध्याय 2:- बिहार में राजनीतिक नेतृत्व की दशा एवं दिशा

अध्याय 3:- न्याय के साथ विकास और श्री नीतीश कुमार
अध्याय 4:- श्री नीतीश कुमार के सामने विकास की चुनौतियां
अध्याय 5:- निष्कर्ष

संदर्भ सूची (Bibliography) :-

- वर्मा,रवींद्र कुमार.(2012).राजनैतिक नेतृत्व. पटना : बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी.
- सिन्हा,अरुण.(2020).नीतीश कुमार और उभरता बिहार. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.
- झा, कामेश्वर.(2019). नित नूतन बिहार उन्नायक नीतीश कुमार. दिल्ली: समीक्षा प्रकाशन.
- मिश्र, जगन्नाथ.(2012).बिहार:विकास और संघर्ष. पटना: नोवेल्टी एंड कंपनी.
- झा,ए.एम. एवं ठाकुर,मिन्नी.(2012).बिहार सुशासन की ओर. दिल्ली: मीनाक्षी प्रकाशन.
- झा, पंकज कुमार.(2010).सुशासन के आइने में नया बिहार. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.
- वर्मा,डॉ विश्वनाथ प्रसाद.(2014).निर्वाचन और राजनीति: बिहार के तीन राजनीतिक निर्वाचनों का अध्ययन. पटना:बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी.
- ठाकुर,संकर्षण.(2015).अकेला आदमी.नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.
- कांत,उदय.(2023). नीतीश कुमार: अंतरंग दोस्तों की नज़र से. पटना: राज कमल प्रकाशन.
- मिश्र,के.के.(2015).विकास का समाजशास्त्र.अयोध्या: भवदीय प्रकाशन.
- चौधरी,प्रसन्न कुमार एवं श्रीकांत.(2010).बिहार में सामाजिक परिवर्तन के कुछ आयाम.नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.

Meena parveen
18.04.24

R. Raushan
18.04.24

- सिंह, एन. के. एवं स्ट्रेन, निकोलस.(2013). द न्यू बिहार.दिल्ली:हार्पर्स कॉलिन्स इंडिया.
- दुबे,श्यामचरण.(2006).शिक्षा, समाज और भविष्य. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड.
- कांत,उदय.(2023). नीतीश कुमार: अंतरंग दोस्तों की नज़र से. पटना: राज कमल प्रकाशन.

- **शोध आलेख :-**

- कुमार, ए. (2013)। राज्य स्तर पर विकास फोकस और चुनावी सफलता: बिहार के नेता के रूप में नीतीश कुमार। साउथ एशिया रिसर्च , 33 (2), 101-121.
- कुमार, ए. (2013)। नीतीश कुमार की सम्मानजनक विदाई: जाति की राजनीति का संक्षिप्त इतिहास। इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली , 15-17.
- Varma, M. B., & Kumar, S. (2023). Women's Movement in Bihar Politics, 1990-2020: बिहार की राजनीति में महिला आंदोलन, 1990-2020. RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary, 8(7), 01-06.
- पंकज, ए. (2020)। जीविका, महिलाएँ और ग्रामीण बिहार: विकास हस्तक्षेप का सांस्कृतिक प्रभाव। समाजशास्त्रीय बुलेटिन , 69 (2), 158-173.
- दलाल, आरएस, और चुग, एन. (2016)। भारत में सुशासन की दिशा में चुनावी सुधार के प्रयास: एक मूल्यांकन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंसेज , 6 (1), 386-400।
- दासगुप्ता, आई., और कर, एस. (2018)। 1990 के दशक से भारत में श्रम बाज़ार। श्रम की IZA दुनिया ।
- शर्मा, एएन (1995)। बिहार में गरीबी की राजनीतिक अर्थव्यवस्था. इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली , 2587-2602।

R. Roushan 18.04.24 | Heena Parveen 18.04.24
शोध पर्यवेक्षक हस्ताक्षर | **शोधार्थी हस्ताक्षर**

Dr. Rajeev Roushan
Assistant Professor & Head
Dept. of Political Science
R.N.A.R. College, Samastipur

MBVarma 20.04.2024 · 20.4.24 · 20/4/24 · 20.04.24